संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रो. नरेन्द्र नाथ चौधुरी स्मृति व्याख्यान का आयोजन

दिनांक 30 मई, 2025 को दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में प्रो. नरेन्द्र नाथ चौधुरी स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दक्षिणी परिसर के निदेशक प्रो. श्रीप्रकाश सिंह, विशिष्ट अतिथि कला संकाय के अधिष्ठाता प्रो. रविप्रकाश टेकचन्दानी, मुख्य-वक्ता भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के सदस्य सचिव प्रो.सच्चिदानन्द मिश्र, और अध्यक्ष दर्शन शास्त्र विभाग के प्रो. रवींद्र एम. सिंह थे।

प्रो. नरेन्द्रनाथ चौधुरी 1949 से 1965 तक विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष रहे। वे काव्यशास्त्र, दर्शन, व्याकरण आदि के मूर्धन्य आचार्य थे। उन्होंने विभाग में शोध तथा प्रकाशन की अभिनव परम्परा स्थापित की। उनकी पावन स्मृति में वर्ष 2002 से वार्षिक स्मारक व्याख्यान-माला आरंभ की गई। इस शृंखला के 21वें संस्करण में व्याख्यान का विषय "भ्रम सिद्धांत और उसका प्रमाण-मीमांसीय महत्व" निर्धारित किया गया।

व्याख्यान-सत्र का शुभारम्भ दीप-प्रज्ज्वलन एवं मंगलाचरण से हुआ। संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो. भारतेन्दु पाण्डेय ने व्याख्यान-परम्परा की पृष्ठभूमि और अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया। मुख्यातिथि प्रो. श्रीप्रकाश सिंह ने भ्रम की वास्तविकता और अनिवार्यता स्थापित करते हुए कहा कि भ्रम ही सत्य की प्राप्ति का माध्यम बनता है। सूर, कबीर और तुलसी को उद्धृत करते हुए उन्होंने बताया कि उद्धव को निराकार के ज्ञान का भ्रम हो गया था, जिसका निराकरण गोपिका राधा के द्वारा किया जाता है। यह भ्रम ज्ञान का मुख्य विषय है क्योंकि इसके रहते ज्ञान नहीं हो पाता है।

व्याख्यान-सत्र का परिचय देते हुए विभागाध्यक्ष प्रोफेसर भारतेन्दु पाण्डेय।

मुख्य वक्ता प्रो. मिश्र ने भ्रम सिद्धांत विषयक प्राचीन और नवीन अवधारणाओं को उपस्थित किया। साथ ही बताया कि भारतीय दर्शन परम्परा का उद्देश्य तत्व-ज्ञान की प्राप्ति है। तत्व ज्ञान की प्राप्ति भ्रम निवारण के पश्चात ही होती है। यह भ्रम पूर्व से विद्यमान रहता है, इसलिए सभी दार्शनिक परम्पराओं में भ्रम-निवारण की बात कही गयी है। भ्रम, मिथ्याज्ञान, अध्यासभास आदि के रूप में सामने आता है। इसे सिद्धांत कहा जाता है क्योंकि समस्त ज्ञान का आश्रय भ्रम को माना गया है। वस्तुतः भ्रम-निवारण के बाद ही तत्व ज्ञान की प्राप्ति होती है।

व्याख्यान सत्र में उपस्थित विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापकगण।

कार्यक्रम के अध्यक्ष और दर्शनशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान प्रो. आर.एम. सिंह ने कहा कि भ्रम हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग है, जो कहीं न कहीं हमें प्रभावित करता है। यह जगत भ्रम के रूप में सामने आता है। इस जगत में कुछ भी स्थाई नहीं है और इसे स्थाई समझ लेना ही भ्रम है। भ्रम ज्ञान के बाद आत्म-साक्षात्कार की स्थिति उत्पन्न होती है।

हिन्दू अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रोफेसर ओमनाथ बिमली प्रो मिथिलेश चतुर्वेदी जी का स्वागत करते हुए।

व्याख्यान के अवसर पर पूर्व-विभागाध्यक्ष प्रो.मिथिलेश चतुर्वेदी, प्रो. ओमनाथ बिमली, प्रो.रंजन कुमार त्रिपाठी, प्रो. सत्यपाल सिंह, प्रो. मीरा द्विवेदी, प्रो. दयाशंकर तिवारी, प्रो. वेदप्रकाश ढिंढोरिया, प्रो. रंजित बेहेरा एवं प्रो. टेक चन्द मीणा सहित विभाग तथा महाविद्यालयों के वरिष्ठ शिक्षक-गण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ श्रुतिकान्त पाण्डेय ने किया। साथ ही डॉ. मोहिनी आर्या, डॉ. करुणा आर्या, डॉ. अरुण कुमार मिश्र और डॉ. धनंजय आचार्य ने विशेष भूमिका का निर्वाह किया। कार्यक्रम समापन विभागीय सांस्कृतिक समिति के संयोजक डॉ. सौरभ जी द्वारा धन्यवाद-ज्ञापन तथा राष्ट्रगान के साथ हुआ।